Name – (Dr) D. N. Singh
Designation – ~~Associate~~ Professor
Deptt – Political Science
Paper – Political Thought
MA – Pol-Sc – 1st Sem
Topic – Plato Compared with Aristotle – Part II
Dissimilarities – Date – 06-11-2020

प्लेटो और अरस्तू के विचारों में असमान तत्व
(DISSIMILARITIES BETWEEN THE POLITICAL THINKING OF PLATO AND ARISTOTLE)

प्लेटो और अरस्तू की बौद्धिक तथा नैतिक पृष्ठभूमि समान होते हुए भी उनकी व्यक्तिगत पृष्ठभूमि में काफी अन्तर था। वह अन्तर इनके चिन्तन पर भी बड़ा प्रभाव डालने वाला था। प्लेटो जहां कुलीन वर्ग का था वहीं अरस्तू मध्यम वर्ग से सम्बन्ध रखता था। अतः प्लेटो ने जहां 'बौद्धिक कुलीनता' (Aristocracy of Intellect) की आवाज उठाई, वहां अरस्तू ने राज्य के शासन संचालन में मध्यम वर्ग की भूमिका प्रतिपादित की। दोनों दार्शनिकों के विचारों एवं कार्य-विधियों में अन्तर प्रतिपादित करते हुए **बेकर** ने लिखा है, "जहां प्लेटो अपनी कल्पना को उड़ान भरने देता है, वहां अरस्तू व्यावहारिक एवं सुस्त है; जहां वह बहुभाषी है, अरस्तू तथ्यगत है; जहां प्लेटो सामान्य मतों से तार्किक परिणामों में कूद पड़ता है, वहां वह अनेक तथ्यों से शनैः-शनैः ऐसे निष्कर्ष निकालता है जो तर्कसंगत तो हैं, किन्तु अन्तिम नहीं; जहां वह हमें उसके चिन्तन का श्रेष्ठतम आदर्श राज्य देता है, अरस्तू हमें वह आवश्यक सामग्री देता है जिसे परिस्थितियों के अनुकूल बनाकर एक आदर्श राज्य का निर्माण किया जा सके।"[1]

अरस्तू तथा प्लेटो की पद्धति, विचारों तथा दृष्टिकोण में आकाश-पाताल का अन्तर है। दोनों दार्शनिकों में असमानताएं अधोलिखित हैं—

(i) **प्लेटो कल्पनावादी, अरस्तू यथार्थवादी**—प्लेटो कल्पनावादी, हवाई योजनाएं बनाने वाला और कल्पना लोक में उन्मुक्त उड़ान करने वाला है। इसके विपरीत अरस्तू यथार्थवादी, क्रियात्मक, व्यावहारिक और भूमि की वास्तविकताओं से बंधा हुआ है। प्लेटो जहां कल्पना को वास्तविकता से अधिक महत्व देता है, वहां अपने काल्पनिक विचारों का खण्डन करते हुए ठोस प्राकृतिक और वास्तविक तथ्यों के आधार पर अपने राजनीतिक का निर्माण करना चाहता है। **फ्रेडरिक पोलक** के अनुसार, "प्लेटो गुब्बारे में बैठकर नये प्रदेशों में घूमता हुआ कभी-कभी निहारिका के आवरण को चीरकर किसी दृश्य को अत्यन्त स्पष्टता से देख सकता है, किन्तु अरस्तू एक श्रमजीवी उपनिवेशवादी की भांति उस क्षेत्र में जाता है और मार्ग का निर्माण करता है।"

(ii) **प्लेटो की पद्धति निगमनात्मक है, अरस्तू की आगमनात्मक**—प्लेटो की विचार-पद्धति निगमनात्मक (Deductive) है, वह सामान्य से विशेष नियमों की कल्पना करता है। वह न्याय, सत्य, सौन्दर्य आदि सामान्य सिद्धान्तों के आधार पर किसी विशेष वस्तु की जांच करता है। इसके विपरीत, अरस्तू आगमनात्मक (Inductive) पद्धति का प्रवर्तक है, वह विशेष घटनाओं और परीक्षण के आधार पर सामान्य नियम बनाता है। उसने यूनानी नगर राज्यों के 158 शासन विधानों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर ही राज्य-विषयक सामान्य सिद्धान्तों का निर्धारण किया है। उसके सब विचार निरीक्षण और अनुभव पर आधारित हैं।

(iii) **प्लेटो अतिमानव की खोज करता है, अरस्तू अति-विज्ञान का अन्वेषक है**—प्लेटो का उद्देश्य एक ऐसे अति-मानव (Superman) की तलाश था जो अपने दार्शनिक ज्ञान तथा प्रतिभा के द्वारा उसकी कल्पना के आदर्श राज्य का निर्माण कर सके। इसके विपरीत, अरस्तू का उद्देश्य राजनीति के ऐसे विज्ञान का विकास का प्रतिपादन करना था जिसका अनुसरण करके राज्य की व्यवस्था का संचालन किया जाये तो राज्य उत्कृष्ट रूप ग्रहण कर सकेगा।[2]

(iv) **प्लेटो क्रान्तिकारी, अरस्तू रूढ़िवादी**—प्लेटो कल्पनावादी होने के कारण क्रान्तिकारी विचार है। वह राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन चाहता है, इसीलिए उसने परिवार और सम्पत्ति के साम्यवाद का विचार दिया था। इसके विपरीत, व्यवहारवादी होने के कारण अरस्तू रूढ़िवादी (Conservative) है। वह सम्पत्ति और दास प्रथा का समर्थन करता है। उसने डकैती तक को धनोपार्जन

---

1 "Where Plato lets his imagination take flight, Aristotle is factual and dull; where Plato is eloquent, Aristotle is exact; where Plato laps from general concepts to locical conclusions, Aristotle slowly works from a multitude of facts to conclusions that are logical but not final; where Plato gives us an ideal common wealth that is the best his mind can conceive, Aristotle gives us the material requisite out of which, by adapting them to circumstances a model state may be constructed."

2 "Plato seeks superman who will create a state as good as ought to be. Aristotle seeks super-science, which will create a state as good as can be."

...कोष्ठक शोषण माना है। सम्पत्ति पर निजी सम्पत्ति के स्वामित्व के सिद्धान्त को स्वीकार कर अरस्तू ने ... मौलिकता का परिचय दिया है। दासता के समर्थन में तर्क देकर उसने मानव समानता की अवधारणा ... प्रहार किया है।

(v) **प्लेटो दार्शनिक राजा की सम्प्रभुता में आस्था रखता है, अरस्तू कानून की प्रभुता का समर्थक**—'रिपब्लिक' ... की महानतम कृति है और उसमें वह शासन की बागडोर 'दार्शनिक शासक' के हाथों में सौंप देता है। ... के अनुसार, 'दार्शनिक राजा प्लेटोवादी राज्य-रचना की समस्त पद्धति का न्याय-संगत परिणाम है।' ... बाद में चलकर केवल 'लॉज' में कानून के महत्व को प्रतिपादित करता है। इसके विपरीत, अरस्तू प्रारम्भ ... से 'पॉलिटिक्स' में कानून की प्रभुता को स्वीकार करता है। अरस्तू के अनुसार, 'व्यक्ति के शासन की ... में कानून का शासन श्रेयस्कर है।'

(vi) **राजनीति और नीतिशास्त्र का सम्बन्ध**—अरस्तू ने राजनीतिक विचारों को नैतिक विचारों से पृथक् करने का प्रयत्न किया। प्लेटो की रचनाओं में दोनों प्रकार के विचार पूर्ण रूप से मिश्रित थे। वह राजनीति ... नीतिशास्त्र का अंग मानता है। "प्लेटो के दर्शन में राजनीतिशास्त्र नीतिशास्त्र में ही समाहित है, इसके विपरीत, अरस्तू प्रथम चिन्तक है, जिसने राजनीतिशास्त्र को नीतिशास्त्र से पृथक् कर उसे स्वतन्त्र स्थान प्रदान किया है।"[1]

(vii) **राज्य की एकता एवं विविधता**—प्लेटो एकतावादी है। वह राज्य की एकता (Unity) को सुदृढ़ करने की दृष्टि से राज्य के शासकों तथा संरक्षकों के लिए वैयक्तिक परिवार और सम्पत्ति की व्यवस्था का ... कर देता है, किन्तु अरस्तू ने प्लेटो के चरम एकता सिद्धान्त को अनुचित माना है। वह विविधता (Diversity) का समर्थक है वह परिवार और सम्पत्ति द्वारा विभिन्नता बनाए रखने के पक्ष में है।

(viii) प्लेटो राज्य को व्यक्ति का वृहद् रूप मानता है जबकि अरस्तू इसे परिवार का वृहद् रूप ... है।

(ix) प्लेटो और अरस्तू की न्याय सम्बन्धी धारणा में अन्तर है। प्लेटो के मतानुसार न्याय का अर्थ है व्यक्तियों द्वारा अपनी योग्यता के अनुसार राज्य में अपने निश्चित कार्य करना, किन्तु अरस्तू के वितरणात्मक न्याय का अर्थ है, राज्य को प्रदान की गयी अपनी वैयक्तिक योग्यता और धनराशि के आधार पर उससे पद और ... प्राप्त करना। प्लेटो के न्याय का विचार कर्तव्य-मूलक है, किन्तु अरस्तू का विचार अधिकारमूलक है ... राज्य के प्रति कार्यों की आनुपातिक समानता के आधार पर नागरिकों को पद और सम्मान प्रदान करता है।

(x) प्लेटो सम्पत्ति और परिवार के साम्यवाद की अवधारणा का प्रतिपादन करता है जबकि अरस्तू ने प्लेटो के सम्पत्ति तथा पत्नियों के साम्यवाद के सिद्धान्त से पूर्ण असहमति व्यक्त की है। अरस्तू का विचार है कि सम्पत्ति व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का साधन है और सम्पत्ति का साम्यवाद बौद्धिक विकास का अवरोधक ... है। पत्नियों का साम्यवाद अपनाने से परिवार संस्था नष्ट हो जायेगी जो कि व्यक्ति तथा परिवार के विकास का मूलभूत आधार है।

(xi) प्लेटो व्यावहारिकता की चिन्ता न करते हुए एक सर्वथा काल्पनिक आदर्श राज्य का विवेचन करता है जबकि अरस्तू कोरे 'आदर्श राज्य' के स्थान पर एक व्यावहारिक राज्य का प्रतिपादन करता है। ... मैक्सी ने लिखा है, "अरस्तू का सर्वोत्तम राज्य प्लेटो का द्वितीय श्रेणी का राज्य है।"

(xii) प्लेटो के आदर्श राज्य में व्यक्ति एक साधन के रूप में दिखलायी देता है। उसने अपनी योजना के अन्तर्गत व्यक्ति को मनमाने तरीके से इस्तेमाल किया है। इसके विपरीत, अरस्तू अपने समस्त दर्शन में व्यक्ति को उसका उचित महत्व प्रदान करता है और वह प्लेटो के समान व्यक्ति की इच्छाओं और आवेगों की उपेक्षा नहीं करता।

1 ... डा., **प्रमुख राजनीतिक चिन्तक**, खण्ड 1, 1983, पृ. 217।